Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. X, Issue No. XIX, July-2015, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

"मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की शिक्षण में उपयोगिता"

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. X, Issue No. XIX,July-2015, ISSN 2230-7540

''मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की शिक्षण में उपयोगिता''

Value Analysis Model of Utilization

Madhuri Paliwal[1] Prof. Ram Rajesh Mishra[2] Prof. Nagesh Shinde[3]

School of Studies in continuing Education, Vikram University, Ujjain (M.P.) India

----------X----------

1.0 प्रस्तावना (INTRODUCTION)-

मूल्य ज्ञानात्मक विकास पर आधारित होता है एवं व्यक्ति के मूल्यों का विकास उसकी तर्कशक्ति के विकास पर निर्भर होता है। तर्क एक मानसिक प्रक्रिया है। जिसके अंतर्गत व्यक्ति किसी समस्या के विभिन्न पहलुओं को सर्वप्रथम समझता है, व फिर विश्लेषण करता है। किसी व्यक्ति की तर्कशक्ति को विकसित करने के लिए मुख्य रूप से चार योग्यता होनी जरूरी है –

1. सुझबुझ
2. विश्लेषण
3. संश्लेषण
4. भाषा

व्यक्ति विकास तर्क शक्ति का उपयोग मूल्य निर्णय के लिये करता है व इस प्रकार उसके द्वारा लिया गया निर्णय भी दी गई परिस्थितियों के अनुरूप व उचित होता है।

परिभाषा :–

''मूल्य विश्लेषण प्रतिमान मूल्य विकास के लिए ज्ञानात्मक विकास सिद्धांत पर आधारित एक उपागम है, जिसके अंतर्गत तर्क शक्ति को विकसित करके मूल्य समस्या के समाधान पर बल दिया जाता है।''

2. परिकल्पना (HYPOTHESIS)-

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की निम्न लिखित परिकल्पना है–

2.1. यदि व्यक्तियों के मूल्य के संबंध में ज्ञान और चिंतन का अवसर दिया जाय इस बात का पता चलेगा की मूल्यों के बीच कभी–कभी द्वन्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है अर्थात दो या दो से अधिक मूल्य टकराते है।

2.2. मूल्य द्वन्द मानव जीवन के अभिन्न अंग है। मूल्य द्वंन्द की स्थिति में व्यक्ति की समझ एवं व्यवहार अस्थिर हो जाता है।

2.3. अस्थिरता हटाने के लिए व्यक्ति को एक उचित एवं वांछनिय निष्कर्ष पर पहुँचना होता है।

2.4. व्यक्तियों को मूल्यों के बारे में पहचानकर एवं विकल्पों का चयन एवं परिणामों के संबंध में विश्लेषण करते आना चाहिए।

3. शिक्षण एवं पोषक प्रभाव : [INSTRUCTION AND NURTURENT EFFECT]

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान की सहायता से छात्रों के व्यवहारों को निम्न लिखित शिक्षण प्रभाव को देखा जा सकता है व समझा जा सकता है–

3.1 तर्कशक्ति का विकास करना : [DEVELOPMENT OF REASONING POWER]:

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के अर्न्तगत सर्वप्रथम व्यक्ति के समक्ष द्वन्दात्मक स्थिति प्रस्तुत की जाती है व ये प्रयास किया जाता है कि ये समस्या के सभी पहलुओं को अच्छी तरह समझ सके ताकि वह सही निर्णय ले सके जिससे की उसकी तर्क शक्ति के सभी तत्वों जैसे– सुझबुझ, विश्लेषण, शंश्लेषण एवं भाषा का विकास हो।

3.2 मूल्य निर्णय का विकास : [DEVELOPMENT OF VALUE JUDGMENT]:

मूल्य निर्णय लेने की वह योग्यता है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी दी गई परिस्थिति में उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से उस विकल्प का चयन करता है। जो उस परिस्थिति के लिए सर्वाधिक अनुरूप एवं वांछनीय होता है।

3.3 मूल्य स्पष्टीकरण की योग्यता का विकास : [DEVELOPMENT OF VALUE CLARIFICATION]:

मूल्य स्पष्टीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है मुख्य रूप से तीन तत्व है –

1. धारण किए हुये मुल्यों के प्रति मानसिक चेतना ।
2. मूल्यों का व्यवहार के माध्यम से प्रदर्शन।
3. प्रदर्शित मूल्यों का दूसरों के समक्ष समर्थन। इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों की तार्किक शक्ति का विकास

www.ignited.in

होता है। जिसके फलस्वरूप स्वयं के मूल्यों के प्रति उसकी मानसिक चेतना विकसित होती है।

इस प्रतिमान के प्रयोग से उपरोक्त शिक्षण प्रभावों के अतिरिक्त निम्नलिखित पोषक प्रभावों को भी प्राप्त किया जा सकता है–

1. मूल्य द्वन्द का अभिज्ञान : [Identification Of Value Conflict] इस प्रतिमान के अंतर्गत छात्रों के समक्ष दुविधा प्रस्तुत की जाती है और छात्रों को प्रस्तुत मूल्य दुविधा में मूल्य द्वन्द को ढूंढने के लिए कहा जाता है। इस प्रकार मूल्य द्वन्द के अभिज्ञान की योग्यता का विकास होता ळें

2. अपसारी चिन्तन : [Divergent Thinking] इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों को निम्नलिखित अपसारी चिन्तन के लिए अवसर प्राप्त होता है।

(क) मूल्य दुविधा प्रस्तुत करने पर मुख्य पात्र के लिए विकल्पों को प्रस्तावित करना।

(ख) प्रत्येक विकल्प के संभावित परिणामों के विषय में विचार करना ।

(ग) प्रत्येक परिणाम की वांछनीयता का मूल्यांकन हेतु उचित मानदण्डों के के चयन के लिए सोचना ।

3. संप्रेषण कौशलों का विकासः [Development of Communication Skills] इस प्रतिमान के क्रियान्वय में प्रमुख संप्रेषण कौशलों पढ़ना, लिखना, बोलना और सुनना के प्रयोग का अवसर प्राप्त होता है। अतः मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के उपयोग द्वारा छात्रों के सम्प्रेषण कौशलों का विकास हो सकता है।

4. शास्त्रार्थ कौशल का विकास रू [Development of Argumentation Skills] शास्त्रार्थ कौशल के अन्तर्गत मुख्य रूप से तार्किक शक्ति एवं संप्रेषण कौशलों का समावेश होता है। चूकि इस प्रतिमान के द्वारा छात्रों की तर्क शक्ति और संप्रेषण कौशलों का विकास होता है इसलिए छात्रों की शास्त्रार्थ दक्षता का विकास भी होता है।

4. प्रयुक्त प्रमुख संकल्पनाएँ : [MAJOR CONCEPTS]

मूल्य विश्लेषण प्रतिमान के सिद्धांतिक एवं व्यवहारिक पक्ष को अच्छी तरह समझने के लिए यह आवश्यक है कि इस प्रतिमान में प्रयुक्त संकल्पनाओं को स्पष्ट रूप से समझा जाय। इस प्रतिमाान में निम्नलिखित पांच संकल्पनाओं का प्रयोग मुख्य रूप से किया गया है।

1.	मूल्य दुविधा	**[Value Dilemma]**
2.	मूल्य द्वन्द	**[Value Conflict]**
3.	मूल्य मानदण्ड	**[Value Criteria]**
4.	अनुशीलन प्रश्न	**[Probe Question]**
5.	मूल्य विश्लेषण	**[Value Analysis]**

4.1. मूल्य दुविधा **[Value Dilemma]** &

मूल्य दुविधा एक ऐसी दूविधा है जिसमें एक या अधिक व्यक्तियों को दो या दो से अधिक विकल्पों में से एक विकल्प को चुनना होता है जबकि सभी विकल्पों का वांछनीयता स्तर लगभग समान होता है।

मूल्य दुविधा की विशेषताएँ – 1. मुक्त अंत – मूल्य दुविधा में अंत में एक प्रश्न पूछा जाता हैं। यह प्रश्न मुक्त अंत वाला होता है।

2. एक द्वंदात्मक स्थिति : एक मुल्य दुविधा में एक द्वन्द्वात्मक स्थिति होनी चाहिए। एक से अधिक द्वन्द्वात्मक स्थिति होने पर छात्रों को विभिन्न प्रकार की कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। वे कभी एक द्वन्द्वात्मक स्थिति पर तो कभी दूसरी द्वन्द्वात्मक स्थिति पर अपना ध्यान केन्द्रित करते है। इस प्रकार उन्हें एक उचित निर्णय पर पहुँचना कठिन हो जाता है।

3. दो या दो से अधिक विकल्प : सामान्य तौर पर एक विकल्प में एक मूल्य निहित होता है। यदि मूल्य दुविधा में एक ही विकल्प है तो व्यक्ति के समक्ष केवल एक मूल्य प्रस्तुत होता है। ऐसी स्थिति में उसे चयन करने का अवसर प्राप्त नहीं होता है। यदि किसी मूल्य दुविधा में विकल्पों की संख्या दो या दो से अधिक है तो उसे विभिन्न विकल्पों में से किसी एक का चयन करना होता है। इस प्रकार उसके सामने एक द्वन्द्वात्मक स्थिति बन जाती है।

4. विकल्पों के चयन की स्वतंत्रता : एक मूल्य दुविधा में विकल्पों के चयन की स्वतंत्रता होनी चाहिए। इसके लिए मुल्य दुविधा में ''मुख्य पात्र को क्या करना चाहिए ? '' जैसा प्रश्न होना चाहिए। यहाँ पर ''चाहिए'' शब्द से संभावनाओं का पता लगाने का अवसर प्राप्त होता है।

5. समीक्षा :

मूल्य विश्लेषण की उत्पत्ति दार्शनिक नीतिशास्त्र से संबंधित है। दार्शनिक नीतिशास्त्र के अंतर्गत् तार्किक एवं बुद्धिमतापूर्ण समस्या समाधान विधियों का प्रयोग वर्तमान, सामाजिक एवं वैयक्तित समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में सामाजिक एवं वैयक्तित समस्याओं का समाधान करने के लिए व्यक्ति मूल्य विश्लेषण की प्रक्रिया में प्रशिक्षित किया जाता है। मूल्य समस्याएँ सदैव मूल्यों में द्वंन्द्व की स्थिति से उत्पन्ना होती है। यदि व्यक्ति के पास मूल्य द्वन्द से संबंधित पर्याप्त ज्ञान हो और उसे मूल्यद्वन्द के लिए विकल्पों और विकल्पों के परिणामों के अभिज्ञान, विवेचना एवं मूल्यांकन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाय तो वह द्वन्दात्मक स्थिति में उचित निर्णय लेने में सक्षम हो सकता है।

संदर्भित ग्रंथ (REFERENCES) –

Broudy, L : Models and method of teaching , Prentice Hall of Australia, 1985.

Coombs, J.R. and Meux, M. : Teaching Strategies for Value Anlysis, in Metcalf, L : Value education, National Council for Social Studies, Washington D C, 1971.

De Cecco, John P . : Psychology of Learning and instruction, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., 1070

www.ignited.in

Fraenkel, J.R. : How to teach Values : An analytical Approach, Prentice Hall Inc, Englewood New Jarsey, 1977.

Good Carter V. : Dictionary of Education, Morgraw Hil Company, New York, 1959.

Passi, B.K. Singh, L.C. and sansanwal , D.N. : Inquiry training model of Teaching , National Psychological Corporation, Agra , 1987.

Passi B.K., and Singh P.: Value analysis Model, NCERT sponcered Reasearch Project, School of education, Devi Ahilya Viswavidyalay, Indore 1990-